

सीखने की नींव : प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में

संगीता

असिस्टेंट प्रोफेसर

शिक्षाशास्त्र विभाग

कमला आर्य कन्या पी.जी. कॉलेज मिर्जापुर

सारांश-प्रस्तुत लेख प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन) के विषय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की परिप्रेक्ष्य में उल्लेख किया गया है। प्रारंभिक बाल्यावस्था गर्भाधारण से लेकर 8 वर्ष की आयु तक की होती है। इस आयु को सीखने की नींव (फाउंडेशनल स्टेज) की संज्ञा दी गई है। विकासात्मक मनोविज्ञान के सैद्धांतिक ढांचे और सीखने संबंधित सिद्धांतों के अनुसार यह समय बच्चों के विकास का सबसे महत्वपूर्ण समय होता है और उसके सही विकास के अनुरूप परिस्थितियों भी मुहैया करता है। पूर्व की शिक्षा नीति 1986 में प्रारंभिक बाल्यावस्था की अवधि 0 से 6 वर्ष निर्धारित की गई थी, परंतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इसे बढ़ाकर 0 से 8 वर्ष कर दिया गया है। इस अवधि को 6 से 8 वर्ष की अवस्था तक बढ़ाने का एक प्रमुख कारण पूर्व प्राथमिक शिक्षा और प्राथमिक शिक्षा के बीच

संक्रमण अवधि को सरल बनाना है। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को उसके सीखने के अनुरूप वातावरण तैयार करना है। जिसमें बालक अपने आपको सम्मानित व सुरक्षित एवं स्वयं के प्रति सकारात्मक भाव रख सके। इसके साथ ही बेहतर स्वास्थ्य, खुशहाल, पोषण, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य संबंधी अच्छी आदतों के लिए मजबूत नियम का निर्माण करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में निवेश एवं इसकी पहुंच देश के सभी बच्चों तक सुनिश्चित करना है। इस नीति में ईसीसीई (अर्ली चाइल्डहुड केयर एण्ड एजुकेशन) के तहत लचीली, बहुआयामी, खेल आधारित गतिविधियां एवं खोज आधारित शिक्षा का समावेशन किया गया है।

मुख्य शब्द— प्रारंभिक बाल्यावस्था, देखभाल, निवेश, शिक्षा।

प्रस्तावना—पंडित जवाहर लाल नेहरू ने बालको की देखभाल एवं शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि-

"राष्ट्र अपने बच्चों के नन्हे कदमों पर आगे बढ़ता है"

"राष्ट्र के बच्चे राष्ट्र की धरोहर है। भविष्य कैसा होगा इस पर निर्भर करेगा कि इस धरोहर का निर्वहन कैसे करते हैं"।

नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री जेम्स हैकमैन का मानना है कि "बच्चों की शुरुआती शिक्षा में निवेश मानव पूंजी के लिहाज से सबसे

बेहतर रिटर्न (लाभ) देता है और यह बेहतर आर्थिक लाभ भी सुरक्षित करता है। यह स्कूल पर निवेश से ज्यादा बेहतर लाभ प्राप्त कराता है”। यह निवेश बच्चों पर सबसे अधिक प्रभाव डालता है (हैकमैन 2021)। न्यूरो विज्ञान ने हमें बताया है कि बच्चे का दिमाग इंद्रियों से जुड़ी गतिविधियों मसलन (देखना, सुनना, स्वाद एवं चखने) को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देने से विकसित होता है। मां द्वारा बच्चों को लोरी सुनाना या पिता का बच्चों के साथ खेलना उनके विकास पर गहरा प्रभाव डालते हैं। इन वर्षों में बच्चों का दिमाग लचीला होता है, तेजी से बढ़ता है और अनुभवों को ग्रहण करता है। इसलिए कहा जाता है कि बच्चों के दिमाग का अनुभव जितना बेहतर होगा उसकी सीखने की क्षमता और उसका विकास उतना ही अधिक होगा। बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी चिकित्सक सेलेजा सेन का दिमाग को लेकर कहना था कि “बच्चों को उनके दिमाग का जितना इस्तेमाल करने दिया जाए वह उतना ही मजबूत होगा”। शिक्षा का प्रारंभ बालक के प्रारंभिक वर्षों से ही हो जाती है। इसलिए पूर्व प्राथमिक विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा को प्रत्येक बच्चों की रुचि, क्षमता के अनुरूप होना चाहिए, क्योंकि हर बच्चा अपनी विशेष योग्यताओं को लेकर जन्म लेता है। इसलिए शिक्षा को बालक की आयु, रुचि, योग्यता, क्षमता एवं आवश्यकता की अनुरूप दिया जाना चाहिए। देश का भविष्य बच्चों की शिक्षा पर निर्भर करता है। स्वस्थ एवं शिक्षित बालक किसी भी देश की सबसे महत्वपूर्ण संपत्ति

होते हैं। जिन बच्चों का प्रारंभिक जीवन भूख, गरीबी, रोग तथा मानसिक उदासीनता में व्यतीत होता है। वे बच्चे जीवन भर इन कमियों की कीमत चुकाते हैं। ऐसे बच्चे अपनी मानवीय संभावनाओं तथा क्षमताओं को पूरी तरह विकसित नहीं कर पाते हैं तथा राष्ट्रीय विकास में कम योगदान देते हैं। शिक्षा वैयक्तिक, शारीरिक एवं मानसिक स्तर को ऊपर उठाती है। इसके साथ ही जीवन की गुणवत्ता को बेहतर करती है। शिक्षा के माध्यम से बालक का सामाजिक व मानसिक कल्याण सुनिश्चित होता है। यह व्यक्ति के मन, शरीर और आत्मा की स्थिति को सुधारने में मुख्य भूमिका निभाती है।

परिवार बालक का पहला विद्यालय होता है और माता उसकी पहली अध्यापिका होती है। जन्म से 6 वर्ष की आयु तक बच्चों का 85% वैयक्तिक व सामाजिक आदतों का विकास हो जाता है। बचपन के यह वर्ष बालक के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इस आयु में विकास दर बहुत तीव्र होता है। तीन से छह: वर्ष की आयु को प्रारंभिक बाल्यावस्था कहा जाता है। इस आयु के दौरान बच्चे गृह, विद्यालय और समाज में स्वीकृत व्यवहार के अनुसार अपने आचरण को ढालना सीखता है। मानव जीवन निरंतर विकासात्मक प्रक्रिया है। इसका आशय है कि जीवन के किसी भी आयु से आगे का विकास जीवन में हुए पिछले विकास का प्रतिफल होता है। मुख्यतः जीवन में हुए पिछले विकास के द्वारा निर्धारित होता है। भारतवर्ष के बच्चों के

संदर्भ में यह बच्चे के अपर्याप्त विद्यालय तैयारी के साथ प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश लेते हैं। फलस्वरूप उनके विद्यालय में असमय बाहर होने की संभावना बढ़ जाती है एवं उनके कक्षा-कक्ष में सीखने का स्तर भी कम हो जाता है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का अर्थ—प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल का अर्थ है--बच्चों के लिए एक देखरेख पूर्ण और सुरक्षित परिवेश उपलब्ध कराना है। इसके साथ ही उनके साफ-सफाई और पोषण इत्यादि का ध्यान देना है। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा का आशय उस विद्यालय पूर्व शिक्षा से है जिसमें कथा, कहानियां, गीत, संगीत, नृत्य और खेल खेलौने इत्यादि के माध्यम से बच्चों को सिखाना एवं उन्हें शिक्षा प्रदान करना शामिल है। अतः इस संदर्भ में कहा जा सकता है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा वह देखभाल एवं शिक्षा है जिसमें संरक्षित एवं अनुकूल वातावरण में देखरेख, स्वास्थ्य, पोषण और प्रारंभिक शिक्षा जैसे अभिन्न तत्वों को सम्मिलित किया जाता है। इनका उद्देश्य जन्म से 6 वर्ष की आयु तक के बच्चों की समग्र रूप में वृद्धि, विकास और उनके अधिगम को प्रोत्साहित करना है। बच्चों को विद्यालय जाने से पूर्व ही उनकी यह शिक्षा शुरू हो जाती है। गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा अपने बच्चों को विद्यालय के परिवेश में न केवल स्वयं को ढालने में सहायता प्रदान

करती है, अपितु उनके द्वारा विद्यालय में बेहतर शिक्षा अर्जित करना भी सुनिश्चित करती है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा का उद्देश्य- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा की निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं-

- एक ऐसे बाल अनुरूप वातावरण का निर्माण करना जहां सभी बच्चे अपने महत्व को समझ सकें।
- अपने आप को सम्मानित व सुरक्षित महसूस करें और स्वयं के प्रति सकारात्मक भाव रख सकें।
- बच्चों में बेहतर स्वास्थ्य, खुशहाली, पोषण, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य संबंधी अच्छी आदतों के लिए मजबूत नींव का निर्माण करना।
- बच्चों को ऐसा परिवेश देना जो प्रभावशाली संप्रेषक बनने में मददगार हो और जहां वे प्रभावशाली तरीके से सुनना और बोलना सीख सकें।
- बच्चों को लगन से सीखने वाला बनने, समीक्षात्मक रूप से सोच रखना, रचनात्मक बने और अपने परिवेश से सहयोग, संवाद, जुड़ाव स्थापित कर सकने में मदद करना।
- पूर्व प्राथमिक विद्यालय से प्राथमिक विद्यालय तक सहज पारगमन के लिए तैयार करना।

- अभिभावकों व समुदाय के साथ भागीदार बनकर कार्य करना जिसमें सभी बच्चों को अवसर मिल सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा-ssssssssssssss

1. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में निवेश एवं इसकी पहुंच देश के सभी बच्चों तक सुनिश्चित करना- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लिए स्वीकार किया कि वर्तमान समय में विशेष रूप से सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के करोड़ों बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा उपलब्ध नहीं है। इसलिए इसमें निवेश करने से इसकी पहुंच देश के सभी बच्चों तक हो सकती है। जिससे कि सभी बच्चों को शैक्षिक प्रणाली में समान रूप से भाग लेने और तरक्की करने के अवसर प्राप्त हो सके। ईसीसीई संभवतया समता स्थापित करने में सबसे शक्तिशाली माध्यम हो सकता है। प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास देखभाल के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधान को जल्द से जल्द निश्चय ही वर्ष 2030 से पूर्व उपलब्ध करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। ताकि पहली कक्षा में प्रवेश पाने वाले सभी बच्चे स्कूली शिक्षा के लिए पूरी तरह से तैयार हो।

2. **प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में लचीली, गतिविधि एवं खोज आधारित शिक्षा-** इस नीति में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में मुख्य रूप से बहुआयामी, लचीली, खेल आधारित, बहुस्तरीय गतिविधियां एवं खोज आधारित शिक्षा को शामिल किया गया है। उदाहरण के रूप में जैसे- अक्षर, भाषा, संख्या, गिनती, रंग, आकार, इंडोर एंड आउटडोर खेल, पहेलियां और तार्किक सोच, समस्या सुलझाने की कला, चित्रकला, पेंटिंग एवं अन्य दृश्य कला, शिल्प, नाटक, कठपुतली, संगीत तथा अन्य गतिविधियों को शामिल करने की बात कही गई है। इसके साथ ही अन्य कार्य जैसे- सामाजिक कार्य, मानवीय संवेदना, अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत, और सार्वजनिक स्वच्छता समूह में कार्य करना और आप इसी सहयोग को विकसित करने पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। इस शिक्षा नीति के द्वारा ईसीसीई का समग्र उद्देश्य बच्चों का शारीरिक-भौतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, समाज, संवेगात्मक, नैतिक विकास, सांस्कृतिक विकास, संवाद के लिए प्रारंभिक भाषा, साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के विकास में अधिकतम परिणामों को प्राप्त करना है।
3. **विस्तृत और सशक्त ईसीसीई संस्थाओं द्वारा की ईसीसीई प्रणाली को लागू करना-**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का वृहद लक्ष्य भारत में चरणबद्ध तरीके से समूचे देश में उच्चतर गुणवत्ता वाले ईसीसीई

संस्थाओं के लिए सार्वभौमिक पहुंच सुनिश्चित करना का वृहद लक्ष्य रखा गया है। पिछड़े जिलों और उन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान और प्राथमिकता देने की बात कही गई है। जो सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े हैं। विस्तृत और सशक्त ईसीसीई संस्थाओं द्वारा ईसीसीई प्रणाली को लागू किया जाएगा। जिसमें (क) पहले से काफी विस्तृत और सशक्त रूप से अकेले चल रहे आंगनबाड़ी के माध्यम से (ख) प्राथमिक विद्यालयों के साथ स्थित आंगनबाड़ी के माध्यम से (ग) पूर्व प्राथमिक विद्यालयों, जो कम से कम 5 से 6 वर्ष पूरा करेंगे और प्राथमिक विद्यालयों के साथ स्थित है। इनके माध्यम से (घ) अकेले चल रहे हैं प्री-स्कूल के माध्यम से इसे लागू किया जाएगा। यह सभी विद्यालय ईसीसीई के पाठ्यक्रम और शिक्षण में प्रशिक्षित कर्मचारी एवं शिक्षकों को भर्ती करने का लक्ष्य सुनिश्चित किया गया है।

4. **प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा की सार्वभौमिक पहुंच को सुनिश्चित करने के लिए आंगनवाड़ी केन्द्रों को सशक्त बनाना-** प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की सार्वभौमिक पहुंच के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों शिक्षक को एनसीईआरटी द्वारा विकसित गुणवत्ता की बुनियादी ढांचे, खेलने के उपकरण और पूर्ण रूप से प्रसिद्ध आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों शिक्षकों के साथ सशक्त बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। प्रत्येक आंगनवाड़ी में

समृद्ध शिक्षा के वातावरण के साथ अच्छी तरह से डिजाइन किया हुआ हवादार, बाल सुलभ और निर्मित भवन होगा। आंगनबाड़ी केन्द्रों में बच्चे गतिविधि से भरे पर्यटन करेंगे और अपने स्थानीय प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों और छात्रों से मिलेंगे ताकि आंगनबाड़ी केन्द्रों से प्राथमिक स्कूलों में संक्रमण को सुचारू बनाया जा सके। आंगनबाड़ियों को स्कूल परिसरों समूह, में पूरी तरह से एकीकृत किया जाएगा और आंगनबाड़ी बच्चों, माता-पिता और शिक्षकों को स्कूल के विभिन्न कार्यक्रमों में परस्पर भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाएगा।

5. **ईसीसीई शिक्षकों का शुरुआती कैंडर तैयार करना एवं प्रशिक्षण प्रदान करना-** इस नीति में यह लक्ष्य रखा गया है कि ईसीसीई शिक्षकों की शुरुआती कैंडर को तैयार करने के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों और शिक्षकों को एनसीईआरटी द्वारा विकसित पाठ्यक्रम शिक्षण- शास्त्रीय फ्रेमवर्क के अनुसार एक व्यवस्थित तरीके से पर प्रशिक्षण दिया जाएगा 10 + 2 और उससे अधिक योग्यता वाले आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री शिक्षकों को ईसीसीई में 6 महीने का प्रमाण पत्र कार्यक्रम कराया जाएगा, और कम शैक्षणिक योग्यता रखने वालों को एक वर्ष का डिप्लोमा कार्यक्रम कराया जाएगा। जिसमें प्रारंभिक साक्षरता, संख्या और ईसीसीई के अन्य प्रासंगिक पहलुओं को सम्मिलित शामिल किया जाएगा। इन कार्यक्रमों को

डिजिटल/ दुरस्थ माध्यम से डीटीएच चैनलों के साथ-साथ स्मार्टफोन के माध्यम से चलाया जा सकता है, जिसे शिक्षकों को अपने वर्तमान कार्य में न्यूनतम व्यवधान के साथ ईसीसीई योग्यता प्राप्त करने में सहूलियत मिलेगी।

6. **हर बच्चे को 5 वर्ष की आयु से पहले प्रारंभिक कक्षा या बाल वाटिका में स्थानांतरित करना-** प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में या परिकल्पना की गई है कि 5 वर्ष की आयु से पहले हर बच्चा एक प्रारंभिक कक्षा या “बालवाटिका” जो कक्षा एक से पहले है, में स्थानांतरित हो जाएगा। जिसमें एक प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा योग्य शिक्षक है तैयारी कक्षा में सीखने मुख्य रूप से खेल आधारित शिक्षा पर आधारित होना चाहिए। जिसमें संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं शारीरिक क्षमताओं और प्रारंभिक साक्षरता संख्या ज्ञान विकसित करने पर ध्यान दिया जाएगा।
7. **मध्याह्न भोजन कार्यक्रम एवं स्वास्थ्य विकास की निगरानी एवं जांच परीक्षण की उपलब्धता सुनिश्चित करना-** इस नीति के अंतर्गत इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि दोपहर के (मध्याह्न) भोजन कार्यक्रम को प्राथमिक विद्यालय के साथ-साथ तैयारी कक्षाओं तक भी विस्तारित किया जाना चाहिए। इसके साथ ही स्वास्थ्य के विकास की निगरानी और जांच परीक्षण को आंगनबाड़ी

व्यवस्था में पहले से उपलब्ध है, उसे प्राथमिक विद्यालयों को तैयारी कक्षाओं के छात्रों को उपलब्ध कराया जाएगा।

8. **प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा पाठ्यक्रम की आयोजन एवं क्रियान्वयन-** राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में इस बात का उल्लेख किया गया है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा पाठ्यक्रम और शिक्षण विधि की जिम्मेदारी मानव संसाधन विकास मंत्रालय की होगी। जिससे कि प्राथमिक विद्यालय के माध्यम से पूर्व प्राथमिक विद्यालय तक उनकी निरंतरता सुनिश्चित की जा सके। शिक्षा के मूलभूत पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया जा सके। इसके अतिरिक्त प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा पाठ्यक्रम का आयोजन और क्रियान्वयन मानव संसाधन विकास मंत्रालय, महिला और बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय तथा जनजाति कार्य मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से किया जाएगा।

निष्कर्ष- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा को भारत की संपूर्ण सुरक्षा व्यवस्था का आधार स्तंभ माना है। यह नीति तीन से आठ वर्ष की आयु की बच्चों के सर्वांगीण विकास शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावात्मक और नैतिक विकास पर बल देती है। एक अच्छी तरह से डिजाइन किया आंतरिक एवं बाल परिवेश बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाता है। प्री-स्कूल के

आंतरिक स्थान को विभिन्न रुचि क्षेत्र जैसे- कला क्षेत्र, खोज क्षेत्र, साक्षरता क्षेत्र, गणित क्षेत्र एवं खेल-खिलौने क्षेत्र आदि में बताकर आनंद में दैनिक कार्यक्रम को नियोजित किए जाने की आवश्यकता है। इसके लिए प्री-स्कूल शिक्षकों का खेल और शिक्षण में कौशल विकास की जरूरत है। उन्हें बच्चों को ऐसा शैक्षिक वातावरण प्रदान करना होगा जिसमें अपनी पांचो ज्ञानेंद्रिय के माध्यम से अपने आसपास के वातावरण पशु पौधों आदि के बारे में सीख पाए। बच्चों को उन्हें आस-पास के वातावरण के प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों प्रकार के वातावरण को सीखने और उनके साथ परिचित होने के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही अध्यापक को अभिभावकों एवं अन्य सुरक्षा दाताओं को प्रारंभिक औपचारिक अधिगम के जोखिम के बारे में सतर्कता पूर्वक ध्यान देने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

- भारत सरकार. (2020) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली, भारत सरकार.
- पटेल, आर. (2025) ज्ञान की बुनियाद: प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट*. वॉल्यू. 13 (9). सितंबर.
- साक्षी. (2025) विद्यालय पूर्व बच्चों की अधिगम उपलब्धि में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की भागीदारी और प्रारंभिक बाल्यावस्था

देखभाल एवं शिक्षा ईसीसीई कार्यक्रम के प्रबंधन का देवीपाटन मंडल के संदर्भ में अध्ययन. काशी हिंदू विश्वविद्यालय. शोधगंगा.

- एनसीईआरटी. (2022) नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर फाउंडेशनल स्टेज 2022. नई दिल्ली.
- गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, ए. (2017) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धांत एवं व्यवहार. शारदा पुस्तक भवन.
- पाठक, पी. डी. (2018) शिक्षा मनोविज्ञान. अग्रवाल पब्लिकेशंस.
- एनसीईआरटी. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा. राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद पटना, बिहार.
- कुमार, पी. (2024) वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा तथा शुरुआती अनौपचारिक शिक्षा की स्थिति. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. अंक.1(2) जुलाई-अक्टूबर.
- कुमार, एन. (2023) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अंतर्दृष्टि एवं प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा. *इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशन रिसर्च एंड ट्रेनिंग*. वॉल्यू. 2 (3).
- <https://doi.org/10.59231/SARI7594>